शक्ति स्वरूपा नारी

Dr. Chetna Dubey
Professor,
St. Paul institute of professional studies.

सारांश –

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः जहाँ नारियाँ की पूजा होती है, वहीं देवता निवास करते है।

राष्ट्र का निर्माण हो या गृहस्थी हो, बिन नारी सब सून। माता, बहन, पत्नी, पुत्री एवं मित्र विविध रूपों में पुरूषों के जीवन के साथ अत्यंत आत्मिक रूप है। महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिये व उपयुक्त स्थान दिलाने के लिये, उनकी शक्ति, व उर्जा का सही उपयोग करने तथा अनेक साथ समानता का व्यवहार हो सके, इसके लिये उन्हें विकास का पूरा अवसर दिया जाये।

जननी को जनमने दो

जनमी को जीने दो''

उपरोक्त पंक्तियाँ सार्थक प्रतीत होती है कि कन्या का जन्म होना शुभ है, राष्ट्र, निर्माण के लिये व राष्ट्र के उत्थान के लिये। अतः आवश्यकता है कि कन्या, शिशु को जन्मने दे, उसका स्वागत करें।

शक्ति स्वरूपा नारी

कोमल है कमजोर नहीं, तु शक्ति का नाम हो नारी है

जग को जीवन देने वाली, मौत भी तुझसे हारी है।''

वेदांतर से हमें ऐसे प्रणाम मिलते रहते हैं, जिनमें नारी के सामाजिक स्तर की अभ्यर्थना की गई है। प्रकृति स्वरूपा नारी को ईश्वरीय शक्तियों के रूप में स्थान मिला है। कभी ज्ञान दायिनी के रूप में 'सरस्वती', वैभवदायिनी के रूप में 'लक्ष्मी' तो कभी शक्ति के रूप में 'चंडी' के रूप धारण कर नारी ने सर्वत्र पूज्य परमशक्ति के रूप में अपना स्थान बनाया। पर आज इस पुरूष प्रधान समाज में अपना स्थान बनाते के लिये संघर्षरत् है।

मृदुला सिन्हा की कहानी संग्रह ''मात्र देह नहीं है औरत' में लेखिका द्वारा कई मौलिक प्रश्न उठाए गए हैं, जो स्त्री–पुरूष की शतुत्रा/होड़ को नहीं, गहन मूल्याकंन समस्याओं पर सोचने को प्रेरित करते हैं।

आज अगर एक माता–पिता की बेटी के प्रति सकारात्मक सोच में परिवर्तन आयेगा तो निश्चित ही समाज में स्थितियाँ बदलेगी और नारी जीवन के सामाजिक स्तर को ऊपर उठाने के सफल हो पायेंगे।

आज भी समाज में बेटी को समानता का दर्जा नहीं दिया जा रहा है। क्या ये बेटियाँ विशेष नहीं है? क्या बेटियों को विशेष शिक्षा, विशेष सुरक्षा, विशेष विकास के अवसर और विशेष सम्मान नहीं मिलना चाहिये ?

स्त्री की वर्तमान अधिकांश समस्याएँ उसे 'देह' मानकर ही है। यदि उसे शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समुच्चय माना जाये, तो बातें बदल जायेंगी। और समाज को अपनी धारणाएँ स्त्री के प्रति बदलनी होगी, वरना नतीजे समाज को ही भुगतने होगें।

स्व. महादेवी वर्मा ने कहा था – मुझे बड़ा दुःख होता है जब मैं आज़ादी के बाद से आज तक समाज को देखती हूँ तो लगता हैं कि आज की नारी को कुछ भी नहीं मिला है। जो कुछ मिला हुआ था, वह भी छिन गया। हमारे जमाने में स्त्री, बेटी, पत्नी और माँ के रूप में सुरक्षित थी। पर्दा प्रथा भी स्त्रियों में पढ़ने–लिखने का रिवाज़ न था, देश परतंत्र था, पर समाज में हम स्त्रियों का स्थान महत्वपूर्ण था।

आज की नारी, व्यक्ति नहीं, वस्तु मानी जाने लगी, उन्होंने दुःख प्रकट किया था कि –

मुझे सौ ऐसी लड़कियाँ भी मिल जाये, जो बिना दहेज ससुराल जाना चाहती है तो मैं अपनी इस वृद्धावस्था में भी क्रांति ला सकती हूँ।''

– महादेवी वर्मा

कहने को लड़कियाँ विशेष होती हैं पर मानता कौन है ? समाज में जो दिख रहा है वैसा होता नहीं है दैविय पूजा नव रात्री में की जाती है। जिसमें हर पास पड़ौसी की कन्याओं को बुला कर कन्या भोजन करवाया जाता है, माता–पिता भी उपवास व पूजन करते हैं, वहीं दूसरी और भ्रूण में ही मार दी जा रही है। एक और कन्य भ्रूण हत्या तो फिर से कन्या पूजन का दिखावा क्यों और कैसा।

या देवी सर्वभतेषु, शक्ति रूपेण संस्थिता

नमस्तस्मै नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमो नमः।।

स्त्री के जब रूपों में इसका मातृरूप प्रमुख है, जो सृष्टि की अक्षुण्ण रखती है। शायद इसीलिये प्रकृति में भी स्त्री के अंदर क्षमा, दया, धृति जैसे विशेष गुण भरे हैं।

वह दिन दूर नहीं जब समाज में लड़कियाँ की घटती आबादी पर भी विचार–विमर्श करना होगा। बेटी के जन्मने पर भी बधावा गाया जाये, वह समुचित और विशेष शिक्षा प्राप्त करे, इसलिये यह बहुत ही आवश्यक होगा कि सबसे पहले उसे जीवन के हर क्षेत्र में विशेष सुविधाऐं प्राप्त हों, और अपने बेटे से भी विशेष माना जाए।

जननी का जनमने

जनमी को जीने,

जीवन देते रहने का

सम–समता–सम्मान चाहिये।

नारी को पहचान चाहिये।''

आज की नारी चिंगारी बनकर उभर रही है। अब समाज की यह जिम्मेदारी है कि वह नारी फूल के समान सुगधिंत, कोमल, सहृदय भी रहे और मौका आने पर चिंगारी बन जाये। नारी के शक्ति व सामर्थ्य से समाज का विकास और समाज के सार्थक सहयोग से नारी का विकास होगा, तभी वह अपने व्यक्तित्व से समाज के उत्थान में सहज भूमिका निभा पाएंगी।

स्त्री को अपने अधिकारों का प्रयोग करना सिखना होगा। तभी महिला वर्ग का उत्थान होगा। यह सिर्फ शिक्षा की एक माध्यम हो सकता है कि महिला अपने हक को पहचानें और हक के लिये लड़े। महिलाएँ पुरूषों से किसी मामलें में कमजोर नहीं हैं। बल्कि वे तो मानवता का आधा अंग हैं, इस सृष्टि की आधी शक्ति है। सिर्फ समाज उनका उपयोग नहीं कर पा रहा है।

लड़की मात्र एक व्यक्ति नहीं, सँस्था है। जब पुरूष पागल हो रहा है तो होने दो। आप तो सजग–सचेत नागरिक बनों। अपनी शक्ति से पुनः आपको नया निर्माण करना है।''

– महादेवी वर्मा जी

स्वतंत्र भारत में नारी को मिले वैधानिक अधिकारों की कमी नहीं – अधिकार ही अधिकार मिले हैं। परन्तु कितनी नारियाँ हैं जो अपने अधिकारों का सुख भोग पाती हैं ? आप अपने कर्तव्यों के बल पर अधिकार अर्जित कीजियें। पर पहले जरूरी है कि अपने अधिकारों की जानकारी होना भी आवश्यक हैं। कर्तव्य और अधिकार दोनों का सदुपयोग कर महिला मानसिक रूप से ताकतवर बन सकती हैं। आपको अपने कर्तव्यों का भान है तो कोई पुरूष आपको भोग्या नहीं बना सकता बल्कि आपका सम्मान ही करेगा। इसी तरह आने वाली पीढ़ी आपकी ऋणी रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

मात्र देह नहीं है औरत – मृदुला त्रिवेदी